खण्ड-9, अंक-1, वर्ष-2021, मु0प्र0 30-34
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v9i1.6
SJIF (2021) : 7.247

शोध पत्र

विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव का अध्ययन

राजीव कुमार सिंह[1] एवं भूपाल सिंह[2]
[1]गणित विभाग, [2]बी0एड0 विभाग
[1,2]पी0बी0पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ सिटी–230 002, उ0प्र0, भारत
dr.rajeevthakur2012@gmail.com

प्राप्ति तिथि–31.08.2021, स्वीकृति तिथि–27.10.2021

सार– शिक्षा समाज का दर्पण है और इस कारण समाज की आशाओं, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करना शिक्षा की अनिवार्यता हो जाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षा विद्यार्थियों के विकास का प्रबलतम साधन है। जिसके प्रभाव में अनुप्राणित होकर वह शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और भावात्मक अनुशासनों से आबद्ध होकर सर्वांगीण विकास करता है। इसी विकास की प्रक्रिया में समायोजन परिस्थितियों से अनुकूलन की क्षमता है, बालक के वातावरणीय परिस्थितियों में भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ सम्मिलित होती हैं। वह इन्हीं से अनुकूलन करने का प्रयास करता है। उसके जीवन में अनेक अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती हैं तथा इन्हीं परिस्थितियों को समायोजित करने के लिए वह अपनी क्षमतानुसार चिन्तन करता है। इस प्रकार विद्यार्थी की चिन्तन शैली उसके समयोजन को प्रभावित करती है।

बीज शब्द– समायोजन स्तर, अधिगम चिन्तन शैली, विज्ञान स्नातक विद्यार्थी

Study of the effect of learning thinking style on the adjustment level of students of Bachelor of Science

Rajeev Kumar Singh[1] and Bhupal Singh[2]
[1]Department of mathematics, [2]Department of B.Ed.
[1,2]P.B. P.G. College,Pratapgarh City-230 002, U.P., India
dr.rajeevthakur2012@gmail.com

Abstract- Education is the mirror of the society and as such it becomes imperative for education to reflect the hopes, aspiration and needs of the society. In this context education is the strong force for the development of the students. Being inspired he develops all round development by being bound by physical, mental, spiritual and emotional disciplines. The ability to adopt to the accommodating circumstances is the process of development. The circumstances in the child's environment include physical, socio-cultural and psychological conditions, He tries to adopt to these. There are many favorable and unfavorable situation in his life, to adjust these situations and he thinks according to his capacity. Thus the thinking style of the child affects his adjustment.

Key words- adjustment level, learning thinking style, students of Bachelor of Science

1. परिचय– शिक्षा समाज का दर्पण है और इस कारण समाज की आशाओं, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करना शिक्षा की अनिवार्यता हो जाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षा विद्यार्थियों के विकास का प्रबलतम साधन है जिसके प्रभाव से अनुप्राणित होकर वह शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और भावात्मक अनुशासनों से आबद्ध होकर सर्वांगीण विकास करता है। शिक्षा से ही मनुष्य में एक जिज्ञासु मस्तिष्क, संवेदनशील हृदय चेतनशील आत्मा और छानबीन करने वाला एक तर्कपूर्ण विवेक प्रतिस्फुटित होकर उसे असम्भव एवं बर्बर तथा पाश्विक प्रवृत्तियों से निकालकर अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर अग्रसर करती है। इतना ही नहीं शिक्षा अतीत के संचित अनुभवों से भविष्य के लिए वर्तमान को परिभाषित करती है। जिसके लिए विविध आयामिक योजनाओं को आधार बनाकर मानवीय विकास की अट्टालिकाओं के लिए नींव का पत्थर बनती हैं, जिससे सभ्यताओं और संस्कृतियों को समृद्ध और सशक्त बनाकर आगामी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जा सके। इतना ही नहीं भारतीय मनीषियों ने शिक्षा को केवल प्राप्ति का ही नहीं विमुक्ति का भी साधन माना है शिक्षा जहाँ एक ओर विकास और उत्थान का कारक है तो दूसरी ओर आडम्बरों, रूढ़ियों और बन्धनों से विमुक्ति का साधन भी। जैसा कि

आदि शंकराचार्य ने शिक्षा के निमित् कहा है कि–

सा विद्यया या विमुक्तये।

वास्तव में शिक्षा को एक और बड़े दायित्व बोध का निर्वहन करना होता है और वह है बदलते परिवेश और परिस्थितियों से अनुकूलन कराना या समायोजन स्थापित करने हेतु प्रशिक्षित करना। इसी सन्दर्भ में क्रो तथा क्रो ने कहा है कि मानवीय अंतर्नोद तथा अन्तर प्रेरणाएं व्यक्ति को कुछ निश्चित लक्ष्यों एवं हितों की ओर उत्प्रेरित करती है। ऐसी दशा में फलीभूत वह व्यवहार जो व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए तुष्टिकारक होता है, समायोजन कहलाता है। अतएव विद्यार्थियों में समायोजन वह स्थिति है जो यथार्थपूर्णता के साथ–साथ व्यक्ति को सन्तोष प्रदान करता है। अन्ततोगत्वा वह व्यक्ति की कुण्ठाओं, उसके तनावों तथा चिन्ताओं से मुक्त या न्यून कर देती है। वस्तुतः समायोजन विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूलन की क्षमता है। व्यक्ति अपने जीवन में अपने वातावरण जिसमें भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण सम्मिलित होते हैं। मनुष्य के जीवन में अनेक अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती हैं, इन परिस्थितियों का सामना करने तथा इनसे समायोजन स्थापित करने के लिए वह अपनी क्षमतानुसार चिन्तन करता है। अर्थात् मनुष्य की चिन्तन क्षमताएं समयोजन को प्रभावित करती है।[1–7]

2. **शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–** वास्तव में जीवन का अर्विभाव ही शिक्षा का अभ्युदय है। जिस प्रकार जीवन अन्न, जल, और श्वाँस से प्रवाहमान होता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के द्वारा वह क्रियाशील और गतिमान होता है। शिक्षा कोई वस्तु नहीं जिसे कहीं से लाया जाय वरन् यह एक अनुभूति है, जीवन–रस है, एक आवश्यकता है जो प्रत्येक प्राणी के लिए अनिवार्यता का स्थान रखती है। वस्तुतः शिक्षा ही जीवन को सुसंस्कारित एवं क्रियाशील बनाने का सबसे महत्वपूर्ण उपक्रम है, परन्तु शिक्षा को फलदायी बनाने और समुन्नत जीवनादर्शों से परिपूरित करने की कड़ी विद्यालय है। विद्यालय केवल ईंट पत्थरों से बना भवन ही नहीं है वरन् वह स्थल है जहाँ पर किसी देश के भविष्य का निर्माण किया जाता है। इसी संदर्भ में कोठारी शिक्षा आयोग (1964–66) का कथन है कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि परिवर्तित सामाजिक उद्देश्यों के अनुरूप विद्यालयों की परिवर्तित अवधारणा से सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास को मूर्तिरूप दिया जाता रहा है। आज विद्यालयों से आशा की जाती है कि वे सर्वगुण सम्पन्न बहुमुँखी व्यक्तित्वशाली प्रतिभाओं का सृजन करें जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपने आप को समायोजित कर सके। समायोजन करने की क्षमताओं का विकास विद्यालयों के कार्यदायित्व का ही अंग है। समायोजन की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए गेट्स महोदय ने कहा है कि– समायोजन एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर सम्बन्ध स्थापित करने में मदद मिल सके।

अतः समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार में परिवर्तन कर अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जीवन एक निरन्तर चलने वाला क्रम है, जिसके द्वारा व्यक्ति वाह्य वातावरण एवं व्यक्तित्व के विविध पक्षों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में लगा रहता है। व्यक्ति खाने पीने के लिए, आश्रय और प्रेम के लिए, सहमति और मैत्री पाने के लिए, सुरक्षा और सम्मान पाने के लिए हमेशा प्रयासरत रहता है। इस प्रकार समायोजन व्यक्ति की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के मध्य शारीरिक तथा मानसिक संतुलन स्थापित करता है। परन्तु मनुष्य को परिस्थितियों से तदात्मय स्थापित करने के लिए अधिगम और चिन्तन की आवश्कता होती है। यद्यपि कई बार व्यक्ति के समक्ष ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है जिसमें व्यक्ति अपने पूर्व अभ्यस्त उपायों के द्वारा समायोजन नही कर पाता। ऐसी परिस्थितियों को समस्या कहा जाता है। समस्या के समाधान के लिए व्यक्ति प्रयत्न और भूल के द्वारा भी प्रयास करता है। प्रयत्न और भूल स्तर से आगे बढ़कर प्रत्ययों और प्रतीकों की सहायता से मन ही मन आन्तरिक रूप से समाधान खोजने का प्रयास करता है इसी प्रक्रिया को चिन्तन कहा जाता है अर्थात् किसी समस्या के उदय होने पर उसके समाधान के लिए उत्पन्न होने वाला विचार, चिन्तन है।

चिन्तन एक जटिल संज्ञानात्मक क्रिया है जिसमें कई मानसिक क्रियाओं की सहायता पड़ती है, जैसे प्रत्यक्षीकरण, पूर्व अधिगम, स्मृति, प्रत्यय निर्माण आदि। चिन्तन प्रक्रियाओं में पूर्व अधिगम सामग्री का बहुतायत उपयोग किया जाता है तथा चिन्तन में पूर्व दृष्टि भी होती है क्योंकि उसमें भविष्य की संभावनाओं का पहले ही विचार कर लिया जाता है। इस प्रकार व्यक्ति की चिन्तन शैली विचार करने की वह मानसिक क्रिया है जो किसी समस्या के कारण आरम्भ होती और उसके अन्त तक चलती है इसी संदर्भ में वारेन महोदय का विचार है कि चिन्तन एक प्रतीकात्मक स्वरूप की विचारात्मक प्रक्रिया है जिसका प्रारम्भ व्यक्ति के समक्ष उपस्थित किसी समस्या या कार्य से होता है, इसमें कुछ प्रयत्न और भूल से युक्त किन्तु उसकी समस्या प्रवृत्ति से प्रभावित क्रिया होती है, जिससे कि अन्त में समस्या का समाधान या निष्कर्ष प्राप्त होता है।[2]

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति का समायोजन उसकी चिन्तन शैली पर निर्भर करता है। चिन्तन शैली जितनी प्रखरतायुक्त होगी समायोजन उतना ही बेहतर ढंग का होगा परन्तु व्यक्ति के चिन्तन शैली पर उसके पूर्व अधिगम स्तर का प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को प्रभावित करने वाली चिन्तन शैली का अध्ययन किया जाये ताकि उसके अधिगम में आने वाली व्यवहारगत बाधाओं का निराकरण किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन का यही महत्व है।[3]

3. समस्या का चयन– प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को प्रभावित करने वाली चिन्तन शैली और अधिगम स्तर के संबंधों के आधार पर निम्नांकित शोध समस्या का निरुपण किया है–

"स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव का अध्ययन"

4. **अध्ययन के उद्देश्य–** प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नांकित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है।

1. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव का अध्ययन करना।

5. **अध्ययन की परिकल्पना–** प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित परिकल्पनाओं की परिपुष्टि की गयी है।

1. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली में सार्थक अन्तर नही है।
3. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं है।

6. **शोध पद्धति तन्त्र–** प्रस्तुत अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक शोध अध्ययन है जो वर्णनात्मक अनुसंधान प्रणाली पर आधारित है। इसमें न्यादर्श के प्रतिचयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिकी प्रविधि को प्रयुक्त किया गया है। इस अध्ययन में प्रतापगढ़ जनपद के दो महाविद्यालयों एम0डी0पी0जी0 कॉलेज तथा पी0बी0पी0जी0 कॉलेज के कुल 50 विद्यार्थियों जिसमें 25 छात्र तथा 25 छात्रायें सम्मिलित हैं, जिन्हें ग्रामीण एवं शहरी संवर्गों के आधार पर भी निरुपित किया गया है।[4]

7. **अध्ययन उपकरण–** प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित शोध उपकरणों को प्रयोग में लाया गया है।

1. समायोजन मापनी (डॉ0 एस0के0 मंगल) छात्र–छात्राओं के समायोजन स्तर के अध्ययन के लिए प्रयोग किया गया है।
2. अधिगम चिन्तन शैली मापनी–(डी0 वेंक्टैयारमन)– छात्र–छात्राओं के अधिगम चिन्तन शैली के अध्ययन के लिए प्रयोग किया गया है।

अध्ययन सीमांकन– प्रस्तुत अध्ययन उ0प्र0 राज्य के प्रतापगढ़ जनपद के केवल दो महाविद्यालयों एम0डी0पी0जी0 कॉलेज तथा पी0बी0पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ में अध्ययनरत् स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।[5]

9. **विश्लेषण और व्याख्या–** प्रस्तुत अध्ययन में विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव के अध्ययन के लिए शोध उपकरणों से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

(i) अध्ययन उद्देश्य संख्या– 1. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(i) परिकल्पना संख्या–1. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं0–1
विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	टी0 मूल्य
1. स्नातक स्तर के छात्र	25	73.54	6.32	4.54	2.387	2.069
2.स्नातक स्तर की छात्राएं	25	68.60	10.13	4.54	2.387	2.069
स्वतन्त्रांश–48 के सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान 2.01 तथा 2.68 पर सार्थक						

विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रस्तुत अध्ययन में **तालिका संख्या–1** के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर के तुलनात्मक अध्ययन में छात्रों के समायोजन स्तर का मध्यमान 73.54 तथा मानक विचलन 6.32 पाया गया जबकि छात्राओं के समायोजन स्तर का मध्यमान 68.60 तथा मानक विचलन 10.13 पाया गया जिसका विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 2.387 तथा माध्य अन्तर 4.94 पाया गया जिसके आधार पर टी–मूल्य 2.069 प्राप्त हुआ जो कि निर्धारित स्वतंत्रांश मान के सार्थकता के दोनों स्तरों पर कम प्राप्त हुआ जिसके कारण कल्पित परिकल्पना स्वीकृति हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नही है।

(ii) अध्ययन उद्देश्य संख्या– 2. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ii) परिकल्पना संख्या–2. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं0–2

विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली का अध्ययन करना

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	टी0 मूल्य
1. स्नातक स्तर के छात्र	25	142.69	8.79	2.697	9.5	3.522
2. स्नातक स्तर की छात्राएं	25	152.19	10.23			
स्वतन्त्रांश–48 के सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान 2.01 तथा 2.68 पर सार्थक						

विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रस्तुत अध्ययन में **तालिका संख्या–2** के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली के तुलनात्मक अध्ययन में छात्रों के अधिगम चिन्तन शैली का मध्यमान से 142.69 तथा मानक विचलन 8.79 पाया गया जबकि छात्राओं के अधिगम चिन्तन शैली का मध्यमान 152.19 तथा मानक विचलन 10.23 पाया गया जिसका विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 2.697 तथा माध्य अन्तर 9.5 पाया गया। जिसके आधार पर टी–मूल्य 3.522 प्राप्त हुआ जो की निर्धारित स्वतंत्रांश मान 48 के सार्थकता के दोनों स्तरों पर 2.01 तथा 2.68 से अधिक प्राप्त हुआ जिसके कारण कल्पित परिकल्पना स्वीकृति हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं के अधिगम चिन्तन शैली में सार्थक अन्तर है।[6]

(iii) अध्ययन उद्देश्य संख्या– 3. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव का अध्ययन करना।

(iii) परिकल्पना संख्या–3. विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली का प्रभाव सार्थक नहीं है।

तालिका सं0–3

विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव का अध्ययन करना

शोधचर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	टी0 मूल्य
1. स्नातक स्तर के छात्र	50	71.07	8.23	1.778	6.37	3.582
2. स्नातक स्तर की छात्राएं	50	147.44	9.51			
स्वतन्त्रांश–98 के सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान 1.98 तथा 2.63 पर सार्थक						

विश्लेषण एवं व्याख्या– प्रस्तुत अध्ययन में **तालिका संख्या–3** के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव के अध्ययन में विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का मध्यमान 71.07 तथा मानक विचलन 8.23 पाया गया जबकि विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली का मध्यमान 147.44 तथा मानक विचलन 9.51 पाया गया जिसका विश्लेषण करने पर मानक त्रुटि 1.778 तथा माध्य अन्तर 6.37 पाया गया जिसके आधार पर क्रान्तिक अनुपात मान 3.582 प्राप्त हुआ जो कि निर्धारित स्वतंत्रांश मान 98 के सार्थकता के दोनों स्तरों पर 2.01 तथा 2.68 से अधिक प्राप्त हुआ जिसके कारण कल्पित परिकल्पना स्वीकृति हो जाती है और स्पष्ट हो जाता है कि स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं के समायोजन स्तर अधिगम चिन्तन शैली का सार्थक प्रभाव है।[7]

10. **निष्कर्ष–** प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने विज्ञान स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर तथा उसपर अधिगम चिन्तन शैली के प्रभाव का अध्ययन किया। जिसमें छात्र–छात्राओं के समायोजन स्तर में समानता के साथ–साथ सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि विद्यार्थियों के अधिगम चिन्तन शैली का सार्थक प्रभाव पाया गया। इसी प्रकार विद्यार्थियों के समायोजन स्तर पर अधिगम चिन्तन शैली का सार्थक प्रभाव पाया गया।

वस्तुतः समायोजन विद्यार्थियों का वह गुण होता है जो परिस्थितियों और वातावरण से अनुकूलन की क्षमता प्रदान करता है। अतः विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर जितना अधिक होगा, उनमें बदलती हुई परिस्थितियों में स्वयं को सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता उतनी ही अधिक होगी और विद्यार्थियों में जितनी उच्च स्तर की अधिगम चिन्तन शैली होगी उनमें समायोजन का स्तर भी उतना ऊँचा होगा।

सन्दर्भ

1. चौहान गीता (2016) शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, प्रकाशन अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा–2, मु0पृ0 339–347।
2. सिंह, अरुण (2008) समाज मनोविज्ञान की रूपरेखा, प्रकाशन मोतीलाल बनारसी दास पटना, मु0पृ0 139–141।
3. त्यागी, गुरुशरण (2012) भारत में शिक्षा का विकास, प्रकाशन अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, मु0पृ0 27–29।
4. टण्डन एवं गुप्ता (2010) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आलोक प्रकाशन लखनऊ, मु0पृ0 13–17।
5. मालवीय राजीव (2018) शिक्षा का दार्शनिक एवं सामाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, प्रकाशन शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, मु0पृ0 59–61।
6. गुप्ता, एस0पी0 व गुप्ता, अलका–(2015) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, सिद्धांत एवं व्यवहार, प्रकाशन शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, मु0पृ0 124–126।
7. सिंह, अरुण (2010) शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, प्रकाशन मोतीलाल बनारसी दास, पटना, मु0पृ0 17–19।